परिशिष्ट

टिप्पणियाँ

भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?

महसूल = किराया। **प्रतिदिन** = प्रतिक्षण। **चुपसाधि** = सुस्त या निष्क्रिय होकर। **उपकारी** = हितैषी। **मसल** = कहावत। **कतवार** = कूड़ा। **ताजी** = अरबी घोड़ा। **मर्दुमशुमारी** = जनगणना। **तिहवार** = त्योहार, पर्व। **फलानी** = फलाँ, अमुक, निर्दिष्ट व्यक्ति या वस्तु। **आयुष्य** = आयु। **लंकलाट** = एक महीन सूती कपड़ा (लांग क्लाथ का बिगड़ा हुआ रूप)। **अंगा** = अंगरखा, कुर्ता। **म्युनिसिपालिटी** = नगर पालिका। **विलायत** = विदेश।

महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन

सप्तर्षि = सात ऋषियों गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि के नाम पर सात तारों का मण्डल। **अंशुमाली** = सूर्य। **अवतीर्ण** = उतरना। **तिमिर** = अंधकार। **पराभव** = पराजित। **अधोभाग** = नीचे का हिस्सा। **जुवाँ** = बैलगाड़ी का वह भाग। **दानव** = राक्षस। **आघात** = प्रहार, चोट। **प्रभा** = कान्ति। **दीप्ति** = प्रकाश। **दिग्वधू** = दिशाओं रूपी वधू। **तुल्यता** = समानता। **लावण्यमय** = सुंदरता-युक्त। **पयोनिधि** = समुद्र। **सुता** = पुत्री। **अल्पवयस्क** = छोटी आयु, किशोर। **मिस** = बहाने। **समधिक** = अत्यधिक। **उच्छेद** = नाश। **दिननाथ** = सूर्य। **आप्यायित** = प्रसन्न। **श्री** = लक्ष्मी, शोभा। **अतिशायिनी** = प्रिया। **भाष्कर** = सूर्य।

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ

आश्रम चतुष्टय = ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। **अन्यान्य कलाओं** = और कलाएँ जैसे वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, काव्य आदि। **भिजई** = भिगोई। **आदर्शात्मक साम्य** = आदर्शों में समता, लक्ष्यगत समानता। **एकेश्वरवाद** = ईश्वर एक है इस सिद्धान्त को माननेवाला, दार्शनिकवाद। **ब्रह्मवाद** = ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करने का सिद्धांत अर्थात् यह मानना कि ब्रह्म के अतिरिक्त सब कुछ मिथ्या है। **ऋचाओं** = ऋग्वेद के मंत्र। **परोक्ष** = अलौकिक या अप्रत्यक्ष (संसार की नहीं प्रत्युत अन्य लोक की)। **ऐहिक** = लौकिक, सांसारिक। **गुरुडम** = आचार्यत्व (इसका प्रयोग अच्छे अर्थ पर नहीं होता)। **वसन्तश्री** = वसंत की शोभा। **संश्लिष्ट** = मिला-जुला। **उद्रेक** = अभिव्यक्ति, जागृति करना। **पिंगल** = छन्द शास्त्र। **मार्मिक** = हृदयस्पर्शी। **पताका** = ध्वजा। **सार्थकता** = महत्त्व। **अवलम्ब** = सहारा। **साम्य** = समता। **बिजई** = विजयी। **मायाजन्य** = माया से उत्पन्न। **तत्सम्भव** = उससे उत्पन्न।

आचरण की सभ्यता

ज्योतिष्मती = ज्योतिर्मयी, प्रकाशयुक्त। **निघण्टु** = वैदिक-शब्द-कोष। **मानसोत्पन्न** = मन से उत्पन्न। **क्लेशातुर** = दुःख से व्याकुल। **उन्मदिष्णु** = उन्मादयुक्त, मतवाला। **अश्रुतपूर्व** = जो पहले न सुना गया हो। **अंजील** = ईसाइयों का धर्मग्रंथ। **रामरोला** = व्यर्थ का शोरगुल। **रसूल** = ईश्वर का दूत। **संभूत** = उत्पन्न। **रेडियम** = एक प्रकाशमय धातु। **नेती** = हठयोग की एक क्रिया, इसमें पेट में कपड़े की पतली पट्टी डालकर आँतें साफ करते हैं। **त्रिपीठक** (त्रिपिटक) = बौद्धों का मूल ग्रंथ जो विनय, सुत्त और अभिधम्म तीन पिटकों (भागों) में विभक्त है। **राजत्व** = राज पद जैसी गरिमा। **कङ्गाल** = निर्धन। **मृदु** = मीठा। **अन्न** = अनाज। **दीक्षा** = शिष्यत्व। **अलापना** = शास्त्रीय विधि के अनुसार गीत गुंजन।

शिक्षा का उद्देश्य

पुरुषार्थ = मनुष्य के जीवन का प्रधान उद्देश्य, वह वस्तु या प्रयोजन जिसकी प्रवृत्ति या सिद्धि के लिए मनुष्य को उद्योग करना चाहिए। पुरुषार्थ चार माने गये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। **प्रतीयमान** = जिससे प्रतीत हो रही हो, जान पड़ता हुआ, जो व्यंजना द्वारा प्रकट हो रहा हो। **वर्णाश्रम** = वर्ण और आश्रम। **मार्क्सवाद** = कार्ल मार्क्स के समाज दर्शन पर आधारित सिद्धांत। **संश्रय** = आधार, आश्रय। **अविद्यावशात्** = अज्ञान के कारण। **आत्मसाक्षात्कार** = आत्मा का अपरोक्ष ज्ञान। **दृश्यमान** = जो देखा जा रहा हो। **मुदिता** = हर्ष, आनन्द, चित्त की वह अवस्था जिसमें दूसरे का सुख देखकर सुख होता है। **निष्कामिता** = मन में वासनाएँ या कामनाएँ न रहने की स्थिति। **परार्थ साधन** = परोपकार। **लोकसंग्रह** = लोक कल्याण या जनता की सेवा। **विरत करना** = हटाना। **युगपत्** = साथ-साथ। **समष्टि** = सम्प्रभुता संपूर्णता, **हमारे कर्त्तव्यों की डोर.....पहुँचती है** = हमें अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह अपने पूर्वजों से लेकर आनेवाली पीढ़ियों तक करना चाहिए अर्थात् पूर्वजों के गुणों को ग्रहण और आनेवाली संतान के लिए कर्त्तव्यों की प्रेरणा देनी चाहिए। **अनुसूया** = दूसरे के गुणों में दोष ढूँढ़ने की वृत्ति का न होना या ईर्ष्या का अभाव। **स्वैरिणी** = स्वेच्छाचारिणी। **ऐहिक** = इस लोक से संबंधित। **आमुष्मिक** = दूसरे लोक से संबंध रखनेवाला। **अभिभूत** = वश में किया हुआ, आक्रांत। **घनिष्ठ** = गहरा। **कौटुम्बिक** = पारिवारिक। **आचारावलियाँ** = आचारों का समूह। **श्रेयस्कर** = उचित। **अभिलषित** = इच्छित, वांछित। **कामोद्दीपन** = काम को बढ़ाना।

आनन्द की खोज, पागल पथिक

कलपते हुए = विलाप करते हुए। **आनन्द-कन्द-मूलक** = आनन्द के भँडार को देनेवाली। **विश्ववल्लरी** = संसाररूपी लता। **स्तब्ध** = गतिहीन। **ब्रह्माण्ड** = संपूर्ण विश्व। **अवाक्** = वाणी रहित, मूक, आश्चर्य से चुप। **विदीर्ण हृदय** = टूटा, शोकग्रस्त। **साख भर रहा है** = गवाही दे रहा है। **सखेद** = दुःख अथवा विवशता के साथ। **घटाकार** = घड़े के आकार का। **नव्यता** = नवीनता। **नितांत** = सर्वथा, पूर्णतः। **राम-पोटरिया** = पोटली के लिए लेखक द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट शब्द अर्थात् पथिक का थोड़ा-सा निजी सामान। **सिर पर हाथ रखनेवाला** = ढाँढस बँधाने वाला, सहायता करने वाला।

अथातो घुमक्कड़-जिज्ञासा

परिपाटी = पद्धति। **जिज्ञासा** = जानने की इच्छा। **छः शास्त्रों** (दर्शनों) = मीमांसा, वेदांत, न्याय, वैशेषिक, सांख्य और योग। **छः आस्तिक ऋषि** = छः दर्शनों के रचयिता। **ईश्वरवादी ऋषि** = जैमिनी, बादरायण, गौतम, कणाद, कपिल और पतंजलि। **शकों-हूणों** = भारतवर्ष के इतिहास में प्राचीनकालीन आक्रमणकर्ता। **समुन्दर के खारे पानी और हिंदू धर्म में वैर** = समुद्र यात्रा को हिन्दू धर्म के विरुद्ध मानना। **करतल भिक्षा तरुतल वास** = हाथ में भिक्षा और वृक्ष के नीचे सोना। **दिग-अम्बर** = दिशाएँ (आकाश) ही जिसके वस्त्र हों, अर्थात् नग्न। **मुक्तबुद्धि** = शास्त्रों से स्वतंत्र रहकर सोचनेवाला। **स्थावर** = स्थिर, न चलनेवाला। **जंगम** = चलने-फिरनेवाला। **अन्योन्याश्रय** = एक दूसरे पर निर्भर। **नवीन संस्करण** = आधुनिक रूप। **दिवांध** = दिन में भी अंधे। **निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतः को विधिः को निषेधः** = जो सत-रज-तम (तीनों गुणों) से रहित मार्ग पर विचरण करता है (योगी या घुमक्कड़) उसके लिए न कोई नियम होता है और न कोई रोक। **रोष** = क्रोध; गुस्सा। **जिज्ञासा** = जानने की इच्छा; उत्सुकता। **छहशास्त्र** = मीमांसा, न्याय, वेदान्त, वैशेषिक, साँख्य और योग। **तरूतल** = वृक्ष के नीचे। **वास** = रहना; सोना। **दिगम्बर** = दिशाएं ही जिनके वस्त्र हैं। **दिवांध** = दिन का अन्धा। **काफले** = समूह। **दिग्दर्शक** = दिशा का बोध कराने वाला (मन्त्र)। **श्वेताम्बर** = सफेद वस्त्रों वाला; श्वेत हैं वस्त्र जिसके।

गेहूँ बनाम गुलाब

शरीर की आवश्यकता = भूख, प्यास, कामुकता आदि। **मानसिक वृत्ति** = सुरक्षा, आदर्शवादिता, सौन्दर्यानुभूति, रसात्मकता आदि। **कोने में डालना** = उपेक्षा करना। **तुरही** = फूँक कर बजाने का एक पतले मुँह का बाजा जो दूसरे सिरे की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है। **उच्छ्वसित** = प्रफुल्ल, पूरा खिला हुआ। **समिधा** = यज्ञ की लकड़ी। **चिर बुभुक्षा** = सदा रहनेवाली भूख। **उटोपिया** = अप्राप्य विचार, आदर्श का सिद्धांत जो पूर्णता का प्रतीक हो पर हो काल्पनिक। **हस्तामलकवत्** = हाथ पर रखे

आँवले की तरह, बिल्कुल स्पष्ट। **स्खलित हो गयी** = भंग होकर नीचे गिर गयी। **शौके दीदार है, तो नजर पैदा कर** = यदि दर्शन करने का शौक है तो अनुकूल दृष्टि उत्पन्न कीजिए। **मानस** = हृदय; मन। **क्षुधा** = भूख। **पिपासा** = प्यास। **शनैः शनैः** = धीरे-धीरे। **यंत्रणाएँ** = यातनाएँ, दुःख। **सोलह आने** = पूरी तरह। **मेनका** = एक अप्सरा, जिसने विश्वामित्र का तप भंग कर दिया था; शकुन्तला की माता। **उर्वशी** = पुरूरवा की पत्नी; इन्द्रलोक की प्रसिद्ध अप्सरा।

सड़क सुरक्षा

विश्व = संसार। **जागरूक** = सजग, सावधान। **विकसित देश** = जिन देशों का विकास हो चुका है। **तीव्र** = तेज। **भंग** = टूटना, हटना। **अर्थदण्ड** = जुर्माना। **निरस्तीकरण** = रद्द करना। **खासकर** = विशेष रूप से। **गति** = चाल। **परिचित**= अवगत। **तहत** = अन्तर्गत। **हद** = सीमा। **अंकुश** = नियन्त्रण।

●●●